

“सुखायु” राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन

दिनांक 08-11-2023 दिन बुधवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के अंतर्गत संचालित गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइन्सेस आयुर्वेद कॉलेज में सुखायु राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन किया गया जिसमें विशिष्ट अतिथि प्रो. रामचन्द्र रेड्डी प्रोफेसर बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय अपने व्याख्यान में कहा कि आप सभी बीएएमएस छात्र भाग्यशाली हैं विश्वस्तरीय सुविधाओं से युक्त यह विश्वविद्यालय आपको मिला है निश्चित रूप से आप गोरक्षनाथ पीठ और माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जो आपके कुलाधिपति भी हैं के सपने को साकार करेंगे विश्वस्तरीय एक एक श्रेष्ठ वैद्य निर्माण करने के सारे गुण इस आयुर्वेद महाविद्यालय के पास है विश्व स्तरीय संकाय जो यहां है उसमें महान सहयोग प्रदान करेगी।

सभी सुखी आयु अर्थात सुखायु चाहते हैं वो आयुर्वेद से ही प्राप्त किया जा सकता है। इसमें रसायन चिकित्सा के बारे में बताया गया है जो आयुर्वेद के आठ अंगों में से एक है जिसमें वर्णित औषधियां जरा अर्थात बुढ़ापे को नहीं आने देती हैं मृत्यु को भी रोकने की क्षमता आयुर्वेद चिकित्सा के पास है। आयुर्वेद में रसायन शास्त्र में भस्म निर्माण करने की विधि भी बताया गया है नाथ सम्प्रदाय में यह ज्ञान वृहद रूप से मिलता है नाथ सम्प्रदाय से गोरक्षनाथ पीठ भी जुड़ा है आने वाले समय में औषधि क्षेत्र में शोध आदि करेगा इसकी योजना बन रही है। आयुर्वेद, योग, और ज्योतिष शास्त्र का जो विशिष्ट ज्ञान भारत के पास है वो विश्व में कहीं नहीं है ये तीनों मिलकर एक महान भारत को विश्वगुरु बनाने अहम भूमिका निभा सकते हैं।

मुख्य अतिथि के रूप उपस्थित डा जी.एन.सिंह ड्रग कंट्रोलर आफ इंडिया ने कहा कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का सपना साकार हो रहा है ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय अग्रणी भूमिका निभा रहा है आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस चिकित्सा में उपयोग होने जा रहा है। हमें अपने खान पान रहन सहन का ध्यान रखना चाहिए। अध्यक्षीय भाषण देते हुए कुलपति डा अतुल कुमार बाजपेई ने कहा कि पूरा विश्व आयुर्वेद के तरफ देख रहा है। आयुर्वेद का इतिहास हजारों वर्षों पुराना होते हुए आज भी जीवन्त है। वैज्ञानिक शोध प्रस्तुति के प्रथम सत्र में स्रोतों का अवलोकन और अन्वेषण विषय पर अपनी प्रस्तुति देते हुए डॉ प्रीतिमयी साहू, एसोसिएट प्रोफेसर, काय चिकित्सा विभाग, श्री बाबू सिंह जय सिंह आयुर्वेदिक मेडिकल कॉलेज, फर्रुखाबाद ने कहा कि स्रोतस शब्द का शाब्दिक अर्थ है मार्ग। स्रोतस के माध्यम से ही परिणाम प्राप्त धातुओं का वहन होता है। उन्होंने स्रोतस विषय पर प्रकाश डाला जिसमें उन्होंने वेदों, उपनिषदों और पुराने ग्रंथों में स्रोतों की मौजूदगी के बारे में बताया। उन्होंने स्रोत-दुष्टि, स्रोत के प्रकार, कुल संख्या के बारे में भी बताया। नर और नारी में स्रोतों का सांख्यश्रोतोमयं हि शरीरम् की व्याख्या की। पुरुषों में अलग-अलग आचार्य के अनुसार कुल संख्या, स्रोतों की संख्या 9 और स्त्री में 12 होती है। उन्होंने सभी 13 प्रकार के स्रोतों के बारे में बताया जो मानव शरीर के सामान्य कामकाज के लिए जिम्मेदार हैं। उन्होंने कहा कि धमनी और शिरा भी एक प्रकार के स्रोतस हैं। सभी प्रेजेंटेशन को अच्छे सचित्र और वीडियो प्रेजेंटेशन की मदद से समझाया गया जो बेहतर समझ के लिए अच्छा था। उन्होंने मुख्य रूप से "श्रोतोमयं हि शरीरम्" पद की सहायता से स्रोतों की व्याख्या की।

द्वितीय सत्र में स्रोतसों के अनुसार आहार और जीवन शैली विषय पर आयुर्वेदिक दृष्टिकोण पर अपनी प्रस्तुति देते हुए डॉ मंगलागौरी वी राव, HOD & एसोसिएट प्रोफेसर, स्वस्थवृत्त एवं योग विभाग, चिकित्सा विज्ञान संस्थान,

बी.एच.यू. वाराणसी ने कहा कि किसी भी प्रकार के विकार के लिए कई प्रकार के स्रोत शामिल होते हैं। दिनचर्या और ऋतुचर्या स्वस्थ रहने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए भी दिनचर्या महत्वपूर्ण है।

उचित पोषण मूल्य के लिए हमें पौष्टिक भोजन विशेषकर मौसमी भोजन लेना चाहिए और वो भोजन अपने स्वाद के अनुसार होना चाहिए। यदि हम अपने घर की किचन को फार्मेसी बनाते हैं तो फार्मेसी को पेट में जाने से रोक सकते हैं। आहार डिजाइन के बारे में बताते हुए कहा कि यदि हम आयुर्वेदिक आहार को रुचिकर तरीके से डिजाइन करते हैं तो वो भोजन हमारे लिए हितकारी होता है। विरुद्ध आहार के बारे में भी बताते हुए कहा कि यह हमारे शरीर को अहितकारी होता है। भोजन में सभी प्रकार के रसों का प्रयोग होना चाहिए।

चतुर्थ सत्र में डा. प्रसन्ना मोगासले एसोसिएट प्रोफेसर संहिता सिद्धांत विभाग एसडीएम कालेज कालेज आफ आयुर्वेद उडुपी कर्नाटक ने कहा कि स्रोतों दुष्टि के कारण और अभिव्यक्ति विषय पर अपनी शोध प्रस्तुति देते हुए कहा कि जो हमारी जिंदगी है वो अभ्यांतर स्रोतस की तरह है। स्रोतों दुष्टि के बारे में बताते हुए कहा कि यदि अनियमित आहार विहार करते हैं तो हम बीमार हो सकते हैं यदि एक स्रोतस में दुष्टि अर्थात विकार उत्पन्न हो रहा तो अन्य स्रोतस में भी विकार उत्पन्न हो सकता है ये अहित आहार विहार के सेवन के कारण होता है अतः हमें हितकारी आहार विहार करना चाहिए।

परिचय भाषण आयुर्वेद कालेज के प्राचार्य डा मंजूनाथ एन और आभार ज्ञापन डा पियूष वर्षा ने किया। उद्घाटन सत्र का संचालन बीएएमएस छात्र आशीष चौधरी और छात्रा शाम्भवी शुक्ला ने किया।

कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डा. अतुल बाजपेई, कुलसचिव डा. प्रदीप राव, कृषि विज्ञान अधिष्ठाता डा. विमल दूबे, डीन एलाएड हेल्थ साइंस डा. सुनिल सिंह, डीन नर्सिंग कॉलेज डा. अजीथा एवं भारत के विभिन्न राज्यों में स्थित आयुर्वेद महाविद्यालय से अपनी शोध प्रस्तुतिकरण करने आए हुए आयुर्वेद के विद्यार्थी एवं शिक्षक सहित गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज आयुर्वेद कालेज के सभी शिक्षक और विद्यार्थी उपस्थित रहे।





